सपनों के-से दिन

-गुरदयाल सिंह

गद्यांश

लेखक 'गुरदयाल सिंह' ने कहानी 'सपनों के–से दिन' में अपने बचपन की खट्टी–मीठी यादों को बड़े ही रोचक ढंग में प्रस्तुत किया है। लेखक ने बताया है कि किस तरह देश, प्रदेश, जाति, वेशभूषा, भाषा आदि सभी प्रकार के भेदों को भुलाकर बच्चों में दोस्ती हो जाया करती थी। अपने विद्यालय के दो अध्यापकों का लेखक ने विशेष ज़िक्र किया है। उन दोनों से ही जुड़ी बहुत–सी यादों को लेखक ने प्रस्तुत पाठ के माध्यम से हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

वर्णनात्मक प्रश्न

[3 अंक]

(50-60 शब्द)

1. लेखक को स्कूल जाने के नाम से उदासी क्यों आती थी? सपनों के-से दिन पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। आपको स्कूल जाना कैसा लगता है और क्यों? [CBSE 2020]

उत्तर : पाठ 'सपनों के-से दिन' में लेखक गुरदयाल सिंह ने अपने बचपन की खट्टी-मीठी यादों को उकेरा है। लेखक ने अपने साथियों के साथ बिताए हुए समय को याद करने के साथ-साथ यह भी बताया है कि वे और उनके अधिकांश साथियों की पढ़ने में कोई रुचि नहीं थी। वे रोते-बिलखते, उदास मन से ही स्कूल जाया करते थे और कुछ तो ऐसे भी थे जो रास्ते में ही बसता फेंककर खेलने निकल जाते। इसका मुख्य कारण स्कूल का सख्त अनुशासन था। इसके अतिरिक्त बच्चों के माता-पिता पढ़ाई का महत्व नहीं समझते थे। अत: परिवार की ओर से भी बच्चों को स्कूल जाने का प्रोत्साहन नहीं मिलता था।

हमें विद्यालय जाना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। हम अपने अध्यापकों का सम्मान करते हैं, मन में उनके प्रति डर नहीं है। इसका कारण उनका आत्मीय स्वभाव ही है।

2. स्कूल किस प्रकार की स्थिति में अच्छा लगने लगता है और क्यों? [CBSE Sample Paper 2020]

उत्तर : सभी बच्चों की शिक्षा में एक समान रुचि हो यह आवश्यक नहीं और यही कारण है सभी बच्चे खुशी-खुशी

विद्यालय जाएँ, यह भी आवश्यक नहीं। जिन बच्चों को खेल-कूद में अधिक दिलचस्पी होती है, जिनके शरीर में अधिक जोश होता है, वह कक्षा की चारदीवारी में बैठना पसंद नहीं करते। उन्हें हर समय कुछ न कुछ शारीरिक क्रियाएँ करने में रुचि होती है। यदि स्कूल का वातावरण और पाठ्यक्रम ऐसा बनाया जाए कि छात्रों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करने का अवसर मिले, शारीरिक और मानसिक रूप से वे व्यस्त भी रहें और उन क्रियाओं के माध्यम से सीखते भी रहें, तो संभव है ऐसी स्थिति में विद्यालय जाना उन्हें अच्छा लगने लगेगा।

3. 'सपनों के-से दिन' कहानी के आधार पर पीटी साहब के व्यक्तित्व की दो विशेषताएँ बताते हुए लिखिए कि स्काउट परेड करते समय लेखक स्वयं को महत्वपूर्ण आदमी एक फौजी जवान क्यों समझता था?
[CBSE 2019]

उत्तर : पीटी साहब एक बहुत ही सख्त स्वभाव के अध्यापक थे। छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे। यदि कोई छात्र जाने-अनजाने में नियमों का उल्लंघन करता, तो वह खाल खींचने के मुहावरे को प्रत्यक्ष कर के दिखा देते थे। उनके चेहरे पर छात्रों ने कभी मुसकान नहीं देखी थी। जब छात्र कदम से कदम मिलाकर स्काउट की परेड करते, तो यदि उनके मुँह से शाबाश निकलता तो छात्रों को लगता मानो फौज के तमगे जीत लिए हों। परेड करते समय छात्रों को धुली हुई साफ वर्दी, पालिश किए हुए जूते पहनने होते थे और पीटी साहब के इशारों पर कदम से कदम मिलाकर चलना होता था। ऐसा करते हुए उन्हें महसूस होता मानो वे सचमुच फौजी जवान बन गए हों।

4. छात्रों का नेता कौन था और उसकी क्या खासियत थी?
[CBSE 2017]

उत्तर : ओमा छात्रों का नेता था। जब बच्चों को ग्रीष्मावकाश कार्य मिलता था, तो अधिकांश समय वे खेलकूद में बिता देते थे। जब छुट्टियाँ समाप्त होने को आती तब उन्हें काम करने की चिंता सताने लगती। हिसाब लगाते कि कितना काम रोज करेंगे तो पूरा हो जाएगा। किंतु समय निकलता जाता और काम नहीं हो पाता। तब वे ओमा से ही प्रेरणा लेकर काम करने से बेहतर अध्यापकों की डाँट-मार सह लेना सही समझते थे। ओमा की बातें और मार-पिटाई का ढंग तो निराला था ही, उसका शारीरिक गठन भी बड़ा ही विचित्र था। छोटा कद, तरबूज जैसा बड़ा सिर। इतने बड़े सिर में नारियल की सी आँखों वाला, बंदरिया के बच्चे-सा चेहरा बहुत ही अजीब लगता था। इतने बड़े सिर से जब किसी की छाती पर वार करता तो ऐसा लगता मानो पसलियाँ ही टूट जाएँगी और उससे दोगुने कद वाले भी पीड़ा से चिल्लाने लगते थे।

5. अगली कक्षा में जाने के विचार से बच्चे उत्साहित भी होते थे और उदास भी। 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।
[CBSE 2011]

उत्तर : सालभर की मेहनत के बाद जब बच्चे अगली कक्षा में जाते हैं, तो अलग ही खुशी और उत्साह महसूस करते हैं। लेकिन लेखक ने अगली कक्षा में जाने का चाव कभी महसूस नहीं किया। एक ओर उन्हें इस बात की खुशी तो होती थी कि वह पहले से बड़े हो गए हैं और नई कक्षा में जा रहे हैं लेकिन कुछ बातें थी जो उनका मन उदास भी कर देती थीं। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण और शिक्षा में माता-पिता की अरुचि के कारण उन्हें पुरानी पुस्तकों से पढ़ना होता था। पुरानी पुस्तकों और नई कॉपियों से जो गंध आती थी वह उनका बाल मन उदास कर देती थी। साथ ही इस बात की भी चिंता सताती थी कि जो अध्यापक पहले पढ़ाते थे अब उनकी अपेक्षाएँ बढ़ जाएंगी, उन्हें लगने लगेगा कि अब हम बड़ी कक्षा में आ गए हैं तो हम हरफनमौला यानी अधिक विद्वान बन गए हैं। जो नए अध्यापक पढ़ाएँगे उनका व्यवहार न जाने कैसा होगा। यह सब बातें सोचकर लेखक का उत्साह कम हो जाता और मन घबराने लगता था।

6. छुट्टियाँ बीत जातीं तो बच्चों में स्कूल का भय क्यों चढ़ने लगता? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : जब लेखक छोटे थे, तब वार्षिक परिणाम आने के बाद डेढ़ - दो महीना पढ़ाई होती थी, उसके बाद ग्रीष्मावकाश शुरू हो जाता था। स्कूल से छुट्टियों में करने के लिए काम दिया जाता था। किंतु अधिकांश छुट्टियाँ तो खेलते-कूदते कब बीत जातीं, पता भी नहीं चलता था। जब छुट्टियाँ खत्म होने को आतीं तो ग्रीष्मावकाश कार्य याद आता। तब हिसाब लगाते कि रोज़ कितना काम करने पर सारा काम पूरा हो जाएगा। जैसे हिसाब के मास्टर जी दो सौ सवाल देते। हिसाब लगाया जाता कि रोज 10 सवाल भी करेंगे तो 20 दिन में पूरे हो जाएँगे। किंतु सोचते-सोचते 10 दिन और बीत जाते। ऐसा लगने लगता मानो दिन छोटे हो गए हैं और काम आगे बढ़ ही नहीं रहा। तब स्कूल की पिटाई का डर बढ़ने लगता था।

7. ओमा कौन था? उसकी क्या विशेषताएँ थी?
[CBSE 2013, 12, 11]

उत्तर : लेखक जब स्कूल में पढ़ते थे, तो छात्रों का नेता ओमा हुआ करता था। उसका स्वभाव और शारीरिक गठन दोनों ही बड़े विचित्र थे। उसकी बातें और मार-पिटाई का ढंग निराला ही था। ठिगना कद और बड़ा-सा सिर। ऐसा लगता था मानो बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा हो। उस बड़े से सिर में नारियल जैसी आँखें और बंदरिया

जैसा चेहरा कुछ अलग ही दिखता था। उस बड़े सिर से जब वह किसी के पेट पर वार करता था, तो लगता था मानो पसलियाँ ही टूट जाएँगी। उसकी उस चोट को बच्चों ने रेल-बंबा नाम दिया हुआ था। ओमा ही था जिससे प्रेरित होकर बच्चे काम करने की अपेक्षा अध्यापकों की डाँट-मार खाना अधिक सस्ता सौदा समझते थे।

8. स्कूल की पिटाई का डर भुलाने के लिए लेखक क्या सोचा करता था? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए। [CBSE 2011]

उत्तर : स्कूल के सख्त नियमों और पीटी साहब जैसे सख्त अध्यापकों के कारण लेखक स्कूल जाने से घबराते थे। उनकी और परिवार की शिक्षा के प्रति अरुचि भी एक कारण था जो उन्हें स्कूल जाने से रोकता था। किंतु वह उस दिन को याद करते थे जब स्काउट की परेड होती। हाथों में दो रंग के रुमाल लेकर कदम से कदम मिलाकर चलते और कोई गलती न होने पर वही पीटी साहब शाबाश बोल देते जो कभी मुसकुराते नहीं थे। बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए सख्त से सख्त सजा देने को तत्पर रहते थे। जब कभी लेखक और उनके साथियों का मन बहुत उदास हो जाता तब वह उन्हीं स्काउट के दिनों को याद करके अपने आप को स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयत्न करते थे। इसके अतिरिक्त हेडमास्टर शर्मा जी जैसे विनम्र स्वभाव के अध्यापक भी थे जिनकी निगरानी में बच्चे अपने आप को सुरक्षित महसूस करते थे।

9. फौज में भर्ती करने के लिए अफसरों के साथ नौटंकी वाले क्यों आते थे? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए। [CBSE 2013, 11]

उत्तर : द्वितीय विश्व युद्ध का समय था। अंग्रेजी अफसर यह चाहते थे कि भारत के ज्यादा से ज्यादा नौजवान उनकी सेना में भर्ती हो जाएँ। इसके लिए कुछ अफसर अपने साथ नौटंकी वालों को लेकर आते और नौजवानों को सैनिकों के जीवन की सुख-सुविधाएँ और ऐशो-आराम के दृश्य दिखाकर आकर्षित करने की कोशिश करते थे। नौटंकी वाले रात को खुले मैदान में शामियाने लगाकर खूबसूरत दृश्य प्रस्तुत करते। कुछ मसखरे अजीब-सी वर्दियाँ पहनकर, फौजी बूट पहनकर गीत गाया करते जिनका अर्थ होता था कि नौजवानों, फौज में भर्ती हो जाओ। यहाँ तुम्हें अच्छा भोजन, अच्छे कपड़े पहनने को नहीं मिलते जबकि फौज में तुम्हें बढ़िया से बढ़िया कपड़े और अच्छे से अच्छा भोजन मिलेगा। तुम्हारी जिंदगी ही बदल जाएगी। गाँव के कुछ नौजवान उनकी बातों में आकर फौज में भर्ती हो जाया करते थे।

10. विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए। [CBSE 2012]

11. 'सपनों-के-से-दिन' पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी की बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति क्या धारणा थी? जीवन मूल्यों के संदर्भ में उसके औचित्य पर अपने विचार लिखिए। [CBSE 2015]

उत्तर : लेखक गुरदयाल सिंह ने अपने स्कूल के जिन अध्यापकों का जिक्र किया है, उनमें से एक थे पीटी मास्टर जो बहुत ही कड़क स्वभाव के थे। बच्चों को मारने, कड़ी सजाएँ देने में उन्हें जरा भी संकोच नहीं होता था। जबकि हेडमास्टर शर्मा जी बहुत ही विनम्र स्वभाव के थे। मारना तो दूर, छात्रों से ऊँची आवाज में बात करना भी पसंद नहीं करते थे। न ही यह चाहते थे कि कोई अन्य अध्यापक छात्रों के साथ सख्ती से पेश आए। यही कारण था कि जब उन्होंने पीटी मास्टर को बच्चों पर अत्याचार करते देखा तो तुरंत उन्हें मुअत्तल कर दिया। वे छात्रों को सुधारने के लिए शारीरिक दंड देने के बिलकुल खिलाफ थे। नैतिक मूल्यों की दृष्टि से देखा जाए तो यह सही भी है। किसी को डरा-धमकाकर प्यार करना और गुस्सा करके विनम्र होना नहीं सिखाया जा सकता। जैसा हम बच्चों को बनाना चाहते हैं पहले वैसा बनकर दिखाना पड़ता है। शिक्षा के नाम पर गलती से भी बच्चों में नैतिक मूल्यों का ह्रास नहीं होना चाहिए। यदि हम विद्यार्थियों से उत्तम व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं तो हमें खुद भी धैर्य, सहानुभूति, सद्भावना, प्रेमभाव जैसे आदर्श जीवन मूल्यों पर अमल करके दिखाना चाहिए।

12. मास्टर प्रीतम चंद के व्यक्तित्व और पहनावे को भयभीत करने वाला क्यों कहा है? 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए। [CBSE 2014]

उत्तर : मास्टर प्रीतम चंद एक ऐसे अध्यापक थे जिनका व्यक्तित्व और पहनावा दोनों ही छात्रों को भयभीत करने के लिए काफी था। बच्चों से जाने-अनजाने कोई भी गलती हो जाए, वे कभी माफ नहीं करते थे बल्कि सख्त से सख्त सजा देने के लिए तत्पर रहते थे। उनका पहनावा और शक्ल सूरत भी यही बताती थी कि वह स्वभाव से बहुत सख्त हैं। माता के दागों से भरा चेहरा, दुबला-पतला शरीर, कील लगे हुए भारी-भरकम जूतों से जब वे फर्श पर चलते, तो उनके जूतों के निशान बन जाते थे। किसी छात्र से जरा-सी भूल हुई नहीं कि बाज की तरह झपटकर आते और खाल खींचने के मुहावरे को प्रत्यक्ष कर देने की कोशिश करते।

छात्रों के मन में उनका इतना खौफ था कि जब उन्हें मुअत्तल कर दिया गया, तब भी उनका कालांश आने पर जब तक कोई अन्य अध्यापक कक्षा में न आ जाता, बच्चों की साँसें रुकी रहती थीं।

13. 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि अभिभावकों की बच्चों की पढ़ाई में रुचि क्यों नहीं थी? पढ़ाई को व्यर्थ समझने में उनके क्या तर्क थे? स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2014]

14. 'सपनों-के-से-दिन' पाठ के आधार पर बताइए कि बच्चों का खेल-कूद में अधिक रुचि लेना अभिभावकों को अप्रिय क्यों लगता है? पढ़ाई के साथ खेलों का छात्र जीवन में क्या महत्व है और इससे किन जीवन मूल्यों की प्रेरणा मिलती है? स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2015]

उत्तर : लेखक 'गुरदयाल सिंह' ने अपने बचपन की जिन खट्टी-मीठी यादों को पाठ 'सपनों के-से दिन' में वर्णित किया है, उससे यह स्पष्ट है कि उनके माता-पिता उन्हें खेलने-कूदने से रोकते थे और यदि वह घंटों खेलकर चोटें खाकर आते, तो उनकी खूब पिटाई होती थी। अक्सर माता-पिता बच्चों को खेलने के लिए रोकते हैं। शायद उन्हें लगता है कि वह समय बर्बाद कर रहे हैं। बाहर खेलने से चोट लगने का खतरा रहता है, गलत संगत में पड़ने का भी डर बना रहता है। किंतु यह सच नहीं है। खेल खेलना व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सब बच्चे मिलकर खेलते हैं तो उनके अंदर खेल भावना के साथ-साथ सहयोग, सहानुभूति, धैर्य, सद्भावना आदि गुणों का भी विकास होता है। खेलते समय जीतने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और हारने से जीवन में असफलता को स्वीकार करना भी आता है।

15. बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति हेडमास्टर शर्मा जी की क्या धारणा थी? बच्चों के संतुलित विकास में एक अध्यापक की क्या भूमिका होती है? [Diksha]

उत्तर : हेडमास्टर शर्मा जी बच्चों को मारने-पीटने के बिलकुल खिलाफ थे। ऐसे मास्टर जो छात्रों के साथ सख्ती से पेश आते, उनकी छोटी-बड़ी गलतियों पर समझाने की बजाय उन्हें पीटते, उनका उचित मार्गदर्शन करने की बजाय उन्हें कठोर सजाएँ देते, वे मास्टर शर्मा जी को बिलकुल पसंद नहीं थे। जैसे ही उन्होंने देखा कि मास्टर प्रीतम चंद चौथी श्रेणी के बच्चों को शब्द रूप न सुनाने के लिए कठोर दंड दे रहे हैं, वह सहन नहीं कर पाए। वह उन पर बहुत बरसे और उन्हें तुरंत मुअत्तल कर दिया।

अध्यापक का कार्य केवल बच्चों को पढ़ाना या अनुशासन में बांधना नहीं होता बल्कि अध्यापक का पूरा व्यक्तित्व बच्चे के लिए एक सीख होती है। वह अध्यापक के शब्दों से ज्यादा उसके व्यवहार से सीखता है। शिक्षक का व्यवहार ही उसे नैतिक मूल्यों से परिचित कराता है अत: शिक्षक को अपनी हर क्रिया विवेकपूर्वक करनी चाहिए।

16. पाठ के आधार पर हेडमास्टर शर्मा जी और पीटी टीचर के स्वभाव का तुलनात्मक वर्णन कीजिए। [Diksha]

उत्तर : लेखक के विद्यालय के पीटी टीचर और हेड मास्टर शर्मा जी के स्वभाव में जमीन-आसमान का अंतर था।

पीटी सर छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे। जब बच्चे प्रार्थना सभा में एकत्रित होते तो उनकी घुड़कियों और ठुड्डों के डर से सीधी कतार में और बराबर दूरी के साथ खड़े होते थे। जरा-सा किसी का सिर भी हिला तो वह बाघ की तरह झपटते और खाल खींचने के मुहावरे को प्रत्यक्ष कर दिखाते थे। उन्होंने चौथी कक्षा को फारसी पढ़ाना शुरू किया तो एक दिन शब्द रूप याद न करके आने पर बच्चों को इतनी सख्त सजा दी कि कुछ कमजोर बच्चे तो वहीं गिर गए। उन्हें बच्चों की हालत पर कभी तरस नहीं आता था। उन जैसा सख्त अध्यापक न कभी किसी ने सुना न देखा था। दूसरी ओर हेडमास्टर शर्मा जी बहुत ही नरम स्वभाव के थे। अधिक गुस्से में अपनी पलकें जल्दी-जल्दी झपकाते थे या उलटे हाथ की एक हलकी-सी चपत लगाते जो बच्चों को चटपटी नमकीन जैसी मजेदार लगती थी। सभी बच्चे उन से डरने की बजाय उनका सम्मान करते थे। यदि कोई अन्य अध्यापक छात्रों को सुधारने के नाम पर उन पर अत्याचार करता, तो वह उसे बर्दाश्त नहीं कर पाते थे।

17. पाठ के लेखक द्वारा वर्णित खेलों और वर्तमान में खेले जाने वाले खेलों में आप क्या अंतर पाते हैं? [Diksha]

उत्तर : खेलकूद के प्रति बच्चों का आकर्षण स्वाभाविक है। यह उनके शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक भी है। किंतु खेलों का भी स्वरूप समय के साथ-साथ बदलता रहता है। जिस प्रकार के खेलों का वर्णन लेखक गुरदयाल सिंह ने पाठ में किया है, आज के बच्चे शायद उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। तालाब में कूदते, हाथ-पैर मारकर कुशल तैराक हो जाते और गीले बदन के साथ रेत के टीलों पर चढ़ जाते। कहीं चोट खाकर घर पहुँचते तो और पिटाई होती। आज के बच्चे घर बैठकर वीडियो गेम खेलना अधिक पसंद करते हैं। जो बाहर खेलने जाते भी हैं तो क्रिकेट, फुटबॉल या औपचारिक रूप से तैराकी प्रशिक्षण लेते हैं। पढ़ाई का बोझ अधिक होने के कारण खेलने का समय निर्धारित करते हैं। अपने आप को धूल-मिट्टी से बचाने की कोशिश करते हैं और खाने के मामले में जंक फूड अधिक पसंद करते हैं।

18. पीटी सर का कौन सा नया रूप बच्चों के सामने आया और उसका उनके बाल मन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : लेखक और स्कूल के सभी छात्र पीटी सर से बहुत डरते थे। उनके जैसा सख्त अध्यापक न कभी किसी ने सुना था न देखा था। किसी ने उन्हें कभी मुस्कुराते हुए तो देखा ही नहीं था। उन्हें केवल बच्चों को अनुशासन मे रखना था भले ही इसके लिए कितनी ही कठोर सजा क्यों न देनी पड़े। उनके इसी कठोर स्वभाव के कारण उन्हें स्कूल से मुअत्तल कर दिया गया था। उसके बाद वह एक किराए के कमरे में रहने लगे थे। बच्चों ने उन्हें अपने छज्जे में एक तोते से प्रेमपूर्वक बातें करते हुए देखा। भीगे हुए बादाम के छिलके उतार-उतारकर बड़े प्यार-से तोते को खिलाते हुए पाया। यह दृश्य बच्चों के लिए बहुत ही अचंभित कर देने वाला था। उन्हें लगता कि क्या उन तोतों को उनकी भूरी आँखों से डर नहीं लगता। पीटी सर के इस नए रूप ने बच्चों को बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया था। एक व्यक्ति जो इतना सख्त और गुस्से वाला है, वह तोतों के साथ इतना विनम्र कैसे हो सकता है! यह बातें उनके लिए अलौकिक थी ।